

# डॉ. डेविड एल. मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी, सत्र 19, द न्यू एक्सोडस, भाग 2

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह सत्र 19, नया निर्गमन, भाग 2 है।

इसलिए, हमने पुराने नियम में निर्गमन के भाव के महत्व को देखा, जो कि परमेश्वर के लोगों की परिभाषित या पहचान करने वाली विशेषता है, जिन्हें परमेश्वर ने पहले निर्गमन में अपने लोगों के रूप में बचाया और मुक्ति दिलाई।

लेकिन हमने देखा कि निर्गमन का महत्व वास्तव में पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को भविष्य में अपने लोगों के उद्धार और उद्धार की कल्पना करने के लिए प्रेरित करता है, जो पहले निर्गमन के बाद एक नए निर्गमन के रूप में होगा। हम यह देखना शुरू करते हैं कि नए नियम के लेखक, विशेष रूप से सुसमाचारों में, निर्गमन और नए निर्गमन दोनों उद्देश्यों को कैसे चित्रित करते हैं, और यीशु को एक नए निर्गमन की भविष्यवाणियों की अपेक्षाओं को पूरा करने के रूप में चित्रित करना शुरू करते हैं। हमने विशेष रूप से मैथ्यू को देखा, और हमने बहुत संक्षेप में मार्क को देखा। ऐसे अन्य ग्रंथ हैं जिनकी ओर हम इशारा कर सकते हैं और चर्चा कर सकते हैं, लेकिन हम उनमें ऐसा नहीं करेंगे।

लेकिन मैं अन्य ग्रंथों पर आगे बढ़ना चाहता हूँ। हम लूका के सुसमाचार का भी उल्लेख कर सकते हैं। हम प्रत्येक सुसमाचार से एक उदाहरण देखेंगे, लेकिन हम लूका के सुसमाचार और लूका अध्याय 4 और पद 16 और उसके बाद, यीशु की सेवकाई की शुरुआत में, पद 16 से शुरू करके, उल्लेख कर सकते हैं।

इसलिए वह, यीशु, नासरत गया, जहाँ वह बड़ा हुआ था, और सब्त के दिन, वह अपने रीति के अनुसार आराधनालय में गया। वह पढ़ने के लिए खड़ा हुआ, और भविष्यवक्ता यशायाह की पुस्तक उसे सौंपी गई। इसे खोलते हुए, उसने वह स्थान पाया जहाँ लिखा था: प्रभु की आत्मा मुझे पर है क्योंकि उसने मुझे गरीबों के लिए खुशखबरी सुनाने के लिए अभिषेक किया है।

उसने मुझे बंदियों को मुक्ति और अंधे को दृष्टि वापस दिलाने का संदेश देने के लिए भेजा है, ताकि प्रभु के अनुग्रह के वर्ष की घोषणा करने के लिए उत्पीड़ितों को मुक्त किया जा सके। अब एक बार फिर, हालाँकि निर्गमन की कुछ स्पष्ट भाषा या शब्द जो हमने यशायाह के कुछ अन्य ग्रंथों में देखे थे, यहाँ नहीं हैं, साथ ही, बंदियों को मुक्ति दिलाने वाली यीशु की यह भाषा, लोगों को उद्धार दिलाने वाली यीशु की यह भाषा जो यशायाह के अध्याय 61 और श्लोक 1 और 2 से सीधे आती है, मुझे लगता है कि कम से कम यह स्पष्ट रूप से इस उद्धार को स्थापित करता है जिसे यीशु लूका 4 में एक नए निर्गमन संदर्भ में लाते हैं। जैसा कि हमने कहा, विशेष रूप से यशायाह की पुस्तक के 40 से 55 तक, लेकिन 40 से 66 तक, सबसे आम उद्देश्य नया निर्गमन है।

अक्सर, जब नए नियम के लेखक पुराने नियम के पाठों के अंशों का हवाला देते हैं या उद्धरण देते हैं, तो वे पाठ अपने साथ उद्धरण का व्यापक संदर्भ लेकर आते हैं। इसलिए, हमें संभवतः यशायाह के अध्याय 61 को यशायाह की पुनर्स्थापना की व्यापक अवधारणा के प्रकाश में पढ़ना चाहिए, जिसे वह एक नए पलायन के रूप में चित्रित करता है। इसलिए, यीशु द्वारा लोगों को कैद से मुक्त करना और उत्पीड़ितों को मुक्ति दिलाना संभवतः यशायाह के नए पलायन के उद्देश्य के हिस्से के रूप में देखा जाना चाहिए ताकि ल्यूक भी यीशु को एक नए पलायन के रूप में चित्रित करे।

यूहन्ना अध्याय 6, श्लोक 25 और उसके बाद, जहाँ यीशु मसीह को जीवन की रोटी के रूप में चित्रित किया गया है, जिसे परमेश्वर ने अपने लोगों इस्त्राएल को भेजा था, जिसे उसने स्वर्ग से अपने लोगों को भेजा था। इसलिए, यीशु कहते हैं कि जब उन्होंने उसे पाया, या यूहन्ना के शब्द यूहन्ना 6 के श्लोक 25 से शुरू होते हैं, जब उन्होंने उसे, यीशु को झील के दूसरी तरफ पाया, तो उन्होंने उससे पूछा, रब्बी, तुम यहाँ कब आए? यीशु ने उत्तर दिया, मैं तुमसे सच कहता हूँ, तुम मुझे इसलिए नहीं ढूँढ़ रहे हो कि तुमने मेरे द्वारा किए गए चमत्कार देखे हैं, बल्कि इसलिए कि तुमने रोटियाँ खाईं और तृप्त हुए। खराब होने वाले भोजन के लिए काम मत करो, बल्कि उस भोजन के लिए काम करो जो अनंत जीवन तक टिकता है, जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा।

क्योंकि उस पर परमेश्वर पिता ने स्वीकृति की मुहर लगाई है। फिर, उन्होंने उससे पूछा कि परमेश्वर की माँगों को पूरा करने के लिए हमें क्या करना चाहिए। यीशु ने उत्तर दिया कि परमेश्वर का कार्य उस पर विश्वास करना है, जिसे उसने भेजा है। इसलिए, उन्होंने उससे पूछा, तुम क्या संकेत दोगे ताकि हम उसे देख सकें और तुम पर विश्वास कर सकें? तुम क्या करोगे? हमारे पूर्वजों ने जंगल में मन्ना खाया था।

जैसा लिखा है, उसने उन्हें खाने के लिए स्वर्ग से रोटी दी। तब यीशु ने उनसे कहा, मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, मूसा ने तुम्हें स्वर्ग से रोटी नहीं दी, परन्तु मेरा पिता तुम्हें स्वर्ग से सच्ची रोटी देता है। क्योंकि स्वर्ग की रोटी वही रोटी है जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती है।

उन्होंने कहा, "हे प्रभु, हमें यह रोटी हमेशा दिया करो।" तब यीशु ने कहा, "मैं जीवन की रोटी हूँ। जो कोई मेरे पास आएगा वह कभी भूखा नहीं रहेगा और जो कोई मुझ पर विश्वास करेगा वह कभी प्यासा नहीं रहेगा।"

एक बार फिर, इस पाठ में कई विवरण हैं, जिन पर चर्चा की जानी चाहिए, लेकिन मैं आपको केवल एक बात बताना चाहता हूँ कि जॉन का उस मन्ना से क्या संबंध है, जो परमेश्वर ने जंगल में लोगों को दिया था और अब सच्ची रोटी जो यीशु है, जो स्वर्ग से आता है, जिसे अब परमेश्वर अपने लोगों को देता है। तो, फिर, जॉन फिर से, मुझे लगता है, निर्गमन के भाव को उद्घाटित कर रहा है। जिस तरह से परमेश्वर ने पहले निर्गमन में अपने लोगों के लिए मन्ना प्रदान किया था, जब वे मिस्र से अपने उद्धार के बाद जंगल में अपनी यात्रा कर रहे थे, उसी तरह से अब परमेश्वर अपने लोगों के लिए यीशु के माध्यम से मन्ना प्रदान करता है, जो स्वर्ग से परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को दिए गए मन्ना में जीवन का प्रतीक है।

इसके अलावा, प्रभु भोज, किसी विशिष्ट पाठ का उल्लेख किए बिना, लेकिन समकालिक सुसमाचार फसह के साथ सहमत हैं जिसे यीशु अपनी मृत्यु, अपने परीक्षण और मृत्यु से ठीक पहले मनाते हैं। सुसमाचारों के अंत में, सुसमाचार यीशु को एक रात्रिभोज साझा करते हुए चित्रित करते हैं, एक ऐसा भोजन जिसे वह अपने शिष्यों के साथ स्थापित और आरंभ करता है, जो दिलचस्प रूप से फसह के भोज के संदर्भ में है, जो मिस्र से पलायन की याद में था। और अब फिर से, यदि आप कर सकते हैं, तो 1 कुरिन्थियों 11 पर जाएं, जहां पॉल ने नई वाचा के संबंध में यीशु के शब्दों को उद्धृत किया है।

लेकिन स्पष्ट रूप से, प्रभु के भोज, सामूहिक भोज या यूचरिस्ट या आप इसे जो भी नाम देना चाहें, में चर्च की भागीदारी का उद्देश्य भगवान के उद्धार के कार्य को स्मरण करना और याद करना है, ठीक उसी तरह जैसे फसह का भोज पहले निर्गमन में अपने लोगों को बचाने के भगवान के कार्य को याद करने के लिए था। इसलिए, संभवतः, प्रभु के भोज को भी नए निर्गमन मूल भाव के हिस्से के रूप में समझा जाना चाहिए। इसलिए, पूरे सुसमाचार में, यीशु एक नए निर्गमन उद्धार को लागू करते हुए प्रतीत होते हैं जैसा कि भविष्यवक्ताओं ने वादा किया था और मूल निर्गमन की अंतिम अभिव्यक्ति और पूर्ति के रूप में जब भगवान ने अपने लोगों को मिस्र से बाहर निकाला था।

इसलिए, सुसमाचार लेखकों ने मैथ्यू और मार्क में यीशु को नए निर्गमन उद्धार को पूरा करने के रूप में चित्रित किया है, जिसका वादा भविष्यवाणी पाठ, विशेष रूप से यशायाह ने किया था। इसलिए, यीशु स्वयं एक नया निर्गमन लाता है। किसी भी विवरण में जाने के बिना, संयुक्त राज्य अमेरिका में शिकागो, इलिनोइस में ट्रिनिटी इवेंजेलिकल डिविनिटी स्कूल में एक नए नियम के प्रोफेसर डेविड पॉवेल ने एक पुस्तक में तर्क दिया है कि यशायाह अध्याय 42-55 प्रेरितों के काम की पुस्तक और प्रेरितों के काम की प्रारंभिक चर्च की कहानी में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

और पॉवेल, रिकी वॉट्स की तरह ही मार्क के लिए भी, डेविड पॉवेल ने प्रेरितों के काम के लिए किया। वह प्रेरितों के काम की पुस्तक में यशायाह के कई संकेतों की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। तो फिर, यह सिर्फ इतना ही नहीं है कि प्रेरितों के काम में निर्गमन के मूल भाव को ज़्यादा सामान्य रूप से विकसित किया गया है, बल्कि विशेष रूप से यशायाह के निर्गमन के मूल भाव को 40-55 से विकसित किया गया है।

इसलिए यदि आप प्रेरितों के काम में निर्गमन के मूल भाव को आगे बढ़ाना चाहते हैं, तो डेविड पॉवेल ने एक बार फिर से तर्क देकर हमारी सेवा की है, चाहे आपको लगता हो कि यह मुख्य उद्देश्य है, यह कम से कम प्रमुख उद्देश्यों में से एक है और जिस तरह से उद्धार और प्रारंभिक चर्च के आंदोलन और सुसमाचार के विकास और प्रसार को प्रेरितों के काम में एक नए निर्गमन के रूप में माना जाता है जो यशायाह अध्याय 40 और उसके बाद के नए निर्गमन की पूर्ति है। इसलिए, यहां तक कि प्रेरितों के काम भी कई जगहों पर, निर्गमन की भाषा और यशायाह की पुस्तक से निर्गमन के उद्देश्यों के साथ प्रतिध्वनित होते हैं। अब, पॉलिन साहित्य और पॉलिन पाठ पर आगे बढ़ते हैं, बार-बार, पॉल मुक्ति को गुलामी से मुक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है, अर्थात्, पाप से मुक्ति और हमारे ऊपर इसकी शक्ति।

लेकिन वह ऐसा कई संदर्भों में करता है, और ऐसा लगता है कि वह निर्गमन के मूल भाव के संदर्भ में ऐसा करता है। इसलिए, उदाहरण के लिए, रोमियों के अध्याय 8 से शुरू करते हुए, पॉल के पत्रों के विहित क्रम में फिर से अनुसरण करने के लिए, और एक बार फिर, संभवतः कई ग्रंथ हैं जिनका हम संदर्भ ले सकते हैं, लेकिन रोमियों अध्याय 8, और मैं पहले कुछ छंदों को पढ़ूंगा और फिर रोमियों अध्याय 8 के छंद 12 से 17 तक जाऊंगा। वास्तव में, चाहे कोई उनसे पूरी तरह सहमत हो या नहीं, एनटी राइट ने तर्क दिया है कि संपूर्ण निर्गमन और निर्गमन के माध्यम से इज़राइल की कहानी पूरी तरह से अध्याय 6 से 8 के अंतर्गत आती है, इसलिए उन्हें अध्याय 8 में बहुत सी नई निर्गमन भाषा मिलती है। लेकिन रोमियों के अध्याय 8 के छंद 1 से शुरू करते हुए, क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उसे परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने पुत्र को पापमय शरीर की समानता में पापबलि करके भेज दिया।

लेकिन फिर आयत 12 से 17 में लिखा है, "इसलिए, हे भाइयो और बहनो, हमारा कर्तव्य तो है, लेकिन शरीर के अनुसार जीना नहीं। क्योंकि अगर तुम शरीर के अनुसार जीओगे, तो मरोगे, लेकिन अगर आत्मा से शरीर के कामों को मारोगे, तो जीओगे। क्योंकि जो लोग परमेश्वर की आत्मा के द्वारा चलाए जाते हैं, वे परमेश्वर की संतान हैं।"

और यह निर्गमन की मूल भावना का पहला तत्व होगा, जिसका नेतृत्व इस्राएलियों के नेतृत्व में किया जा रहा है। अब, परमेश्वर के लोगों का नेतृत्व परमेश्वर की आत्मा द्वारा किया जाता है। श्लोक 15: जो आत्मा तुम्हें मिली है वह तुम्हें गुलाम नहीं बनाती ताकि तुम फिर से डर में रहो।

बल्कि, जो आत्मा आपको मिली है, उसने आपको पुत्रत्व के लिए गोद लिया है। और उसके द्वारा हम पुकारते हैं, अब्बा, हे पिता। आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ गवाही देती है कि हम परमेश्वर की संतान या परमेश्वर के पुत्र हैं।

अब, अगर हम बच्चे हैं, तो हम वारिस हैं, परमेश्वर के वारिस और मसीह के सह-वारिस, अगर हम वास्तव में उसके दुख में भागीदार हैं, ताकि हम उसकी महिमा में भी भागीदार हो सकें। अब, आत्मा द्वारा नेतृत्व किए जाने के विषय के अलावा, गुलामी और बेटों या बच्चों के बीच विपरीत भाषा पर ध्यान दें। तो, जिस तरह से इस्राएलियों को मिस्र के गुलाम बनाया गया था, मिस्र की गुलामी में, अब परमेश्वर के लोगों को पाप के बंधन और गुलामी में वर्णित किया गया है। वे गुलाम हैं, लेकिन अब उन्हें पूर्ण विकसित पुत्र, या पूर्ण विकसित बच्चे बनने के लिए बचाया और छुड़ाया गया है, फिर से शायद पुत्रत्व की भाषा को दर्शाता है जो निर्गमन अध्याय 4 में भी वापस जाती है, जहाँ इस्राएल परमेश्वर का पुत्र था।

फिर इस्राएल को गुलामी से छुड़ाया गया और एक तरह से परमेश्वर के बच्चों के रूप में गोद लिया गया, परमेश्वर के पुत्रों के रूप में गोद लिया गया, उसके साथ एक वाचा संबंध में। इसलिए यह आंदोलन जो हम रोमियों अध्याय 8, श्लोक 12 से 17 में पाते हैं, बच्चों की गुलामी और परमेश्वर की आत्मा द्वारा नेतृत्व किए जाने का, शायद निर्गमन भाषा को प्रतिबिंबित करने के लिए है। गलातियों अध्याय 4, फिर से विहित क्रम में आगे बढ़ने के लिए, गलातियों अध्याय 4 और श्लोक 3 से 8, और मैं चाहता हूँ कि आप फिर से मुक्ति की भाषा, गुलामी से मुक्ति की भाषा, पुत्र बनने की

भाषा पर ध्यान दें, यह सब निर्गमन की कल्पना या गुलामी से मुक्ति की निर्गमन भाषा को दर्शाता है और फिर परमेश्वर के पुत्र बन जाना, परमेश्वर के साथ एक वाचा संबंध में पुत्रों के रूप में गोद लिया जाना।

इसलिए, पद 3, जब हम कम उम्र के थे, तब भी हम संसार की मौलिक आध्यात्मिक शक्तियों के अधीन दासता में थे। इसलिए, पौलुस अब लोगों को किसी विदेशी अत्याचारी राष्ट्र की गुलामी में नहीं देखता, हालाँकि वे हो सकते थे, लेकिन अब पाप की गुलामी, शैतान की गुलामी, और बुराई जिससे उन्हें छुटकारा पाने की ज़रूरत है। इसी तरह, जब तुम कम उम्र के थे, तब भी हम संसार की मौलिक आध्यात्मिक शक्तियों के अधीन गुलामी में थे।

लेकिन जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन जन्मा, कि व्यवस्था के अधीनों को छुड़ाए, और हम को पुत्रत्व के लिए गोद लिया जाए। क्योंकि फिर से, रोमियों 8 के समान और याद दिलाने वाली भाषा में, क्योंकि तुम उसके पुत्र हो, परमेश्वर ने अपने पुत्र की आत्मा को हमारे हृदयों में भेजा है, वह आत्मा जो अब्बा पिता कह कर पुकारती है। इसलिए अब तुम दास नहीं रहे, बल्कि परमेश्वर की संतान या पुत्र हो।

और चूँकि तुम उसके बच्चे या बेटे हो, इसलिए परमेश्वर ने तुम्हें वारिस भी बनाया है। तो एक बार फिर, यह भाषा कि हम गुलामी में थे, परमेश्वर ने हमें छुड़ाया है और हमें उससे बचाया है ताकि हम उसके बेटे बन सकें, उसके दत्तक पुत्र के रूप में उसके बच्चे। और उसके कारण, उसके वारिस भी।

शायद विरासत की भाषा फिर से उस भूमि की विरासत की याद दिलाती है जो पुराने नियम में पाई जाती है। एक और पाठ, कुलुस्सियों अध्याय 1, एक ऐसा पाठ है जिसे हम पहले ही पढ़ चुके हैं, लेकिन नए निर्गमन विषय के संबंध में इसे फिर से पढ़ना महत्वपूर्ण है। कुलुस्सियों अध्याय 1 और आयत 12 और 13।

और पिता को धन्यवाद दीजिए, खुशी से धन्यवाद दीजिए, जिसने आपको प्रकाश के राज्य में अपने संतों या पवित्र लोगों की विरासत में हिस्सा लेने के योग्य बनाया है, जो पुराने नियम की सभी प्रकार की भाषा के साथ प्रतिध्वनित होता है। श्लोक 13, क्योंकि उसने हमें अंधकार के प्रभुत्व से छुड़ाया है और हमें अपने प्रेम के पुत्र के राज्य में लाया है, जिसमें हमें छुटकारा, पापों की क्षमा मिलती है। तो एक बार फिर, एक प्रभुत्व से बचाए जाने और दूसरे में स्थानांतरित होने की यह भाषा, पलायन के आंदोलन को याद दिलाती है, उत्पीड़न से बचाया जाना और अब परमेश्वर के राज्य में स्थानांतरित होना।

लेकिन फिर, इसे छुटकारे के कार्य के रूप में वर्णित करके, मुझे लगता है कि यह स्पष्ट रूप से इसे निर्गमन से भी जोड़ता है, जो पापों की क्षमा लाता है। वास्तव में, इसके लिए एक और फुटनोट के रूप में, अगर मेरी राय में, या अगर यह सच है, और मेरी राय में यह है, तो पॉल कुलुस्सियों में जिन झूठे शिक्षकों को संबोधित कर रहे हैं या उनका मुकाबला कर रहे हैं, वे यहूदी धर्म के भीतर एक आंदोलन हैं, यह और भी महत्वपूर्ण होगा कि लेखक सुझाव दे रहे हैं कि उनके पाठक अब, उनके गैर-यहूदी पाठक, पहले से ही नए निर्गमन में भाग ले चुके हैं और उन्हें इस यहूदी आंदोलन

की ओर आकर्षित होने या उसका हिस्सा बनने की आवश्यकता नहीं है जो मुझे लगता है कि पॉल द्वारा कुलुस्सियों में लड़ी जा रही शिक्षा के पीछे निहित है। इसलिए अब वे निर्गमन से गुजर चुके हैं, उन्हें उत्पीड़न, अंधकार के राज्य से मुक्ति मिल गई है, अब उन्हें ईश्वर के राज्य में, ईश्वर के पुत्र के राज्य में स्थानांतरित कर दिया गया है, और इसे तब छुटकारे के कार्य के रूप में वर्णित किया गया है, और यह पाप के तहत उत्पीड़न से मुक्ति या मुक्ति है।

यह भी संभव है कि हमें छुटकारे की एक और भाषा समझनी चाहिए। जब हम उद्धार के बाइबिल के धार्मिक विषय पर चर्चा करेंगे तो हम छुटकारे के बारे में और बात करेंगे। लेकिन यह भी संभव है कि हमें पौलुस की कुछ अन्य छुटकारे की भाषा को समझना चाहिए, क्योंकि अंततः, कम से कम निहित रूप से, इसकी पृष्ठभूमि निर्गमन में है।

इसलिए, इफिसियों के अध्याय 1 और पद 7 में, जहाँ पौलुस ने उन आशीषों का वर्णन किया है जो हमें परमेश्वर को अपना पिता मानने के कारण प्राप्त होती हैं, पद 7 में, वह कहता है, उसमें, मसीह में, हमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा, पापों की क्षमा प्राप्त होती है। और फिर पद 14, पवित्र आत्मा के संदर्भ में, जो हमारी मुहर है, जो परमेश्वर के अधिकार में रहने वालों के छुटकारे तक हमारी विरासत की गारंटी देने वाली जमा राशि है। आप रोमियों, अध्याय 3 और विशेष रूप से पद 24 में छुटकारे की भाषा पाते हैं, रोमियों अध्याय 3 पद 24, पद 23 में कहा गया है, क्योंकि सभी ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं, और सभी मसीह यीशु द्वारा आए छुटकारे के माध्यम से उसकी कृपा से स्वतंत्र रूप से धर्मी ठहराए जाते हैं।

इसलिए, छुटकारे की भाषा में निर्गमन की कल्पना को भी दर्शाया जा सकता है और उसे ग्रहण किया जा सकता है, निर्गमन को छुटकारे के रूप में, परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को मिस्र से छुड़ाना और मुक्त करना। छुटकारे के अर्थ का मूल यही है, मुक्त करना या खरीदना, किसी से मुक्त करना, किसी से मुक्त करना। जैसा कि मैंने कहा, जब हम उद्धार के धार्मिक विषय पर चर्चा करेंगे, तो हम उस भाषा पर अधिक ध्यान देंगे।

पॉल में, अन्य संभव, या तो उनमें से एक जोड़े, मुझे लगता है कि स्पष्ट है, लेकिन निर्गमन के लिए अन्य संभावित लिंक। 1 कुरिन्थियों अध्याय 5 और श्लोक 7, 1 कुरिन्थियों 5, 7. मैं वापस आऊंगा और 6 पढ़ूंगा। आपका घमंड अच्छा नहीं है। क्या आप नहीं जानते कि थोड़ा सा खमीर पूरे आटे को खमीर कर देता है? पुराने खमीर से छुटकारा पाएं ताकि आप एक नए अखमीरी बैच बन सकें जैसा कि आप वास्तव में हैं।

मसीह के लिए, हमारे फसह के मेमने की बलि दी गई है। इसलिए अब अपने लोगों के पापों के लिए क्रूस पर मसीह की मृत्यु को एक बलिदान मेमने, फसह के मेमने के संदर्भ में देखा जाता है, न कि किसी भी बलिदान के रूप में, बल्कि अधिक विशेष रूप से, वह इसे फसह के मेमने और फसह के बलिदान से जोड़ता है। इसलिए एक बार फिर, क्रूस पर यीशु की मृत्यु एक नए पलायन का उद्घाटन करती है, जिसमें यीशु की अपनी मृत्यु फसह के मेमने की मृत्यु है।

एक और पाठ जिसे हमने कई मौकों पर पढ़ा है, शायद एक नए निर्गमन की कल्पना भी करता है, और ऐसा इसलिए है क्योंकि कुछ पाठ उसी संदर्भ में प्रतीत होते हैं, और वह है 2 कुरिन्थियों

अध्याय 6। 2 कुरिन्थियों अध्याय 6, श्लोक 16 और 17। श्लोक 16, परमेश्वर के मंदिर और मूर्तियों के बीच क्या समझौता है? क्योंकि हम जीवित परमेश्वर के मंदिर हैं। जैसा कि परमेश्वर ने कहा है, मैं उनके साथ रहूँगा और उनके बीच चलूँगा, और मैं उनका परमेश्वर बनूँगा, और वे मेरे लोग होंगे।

यह पाठ यहजेकेल अध्याय 37 से लिया गया है, लेकिन यह लैव्यव्यवस्था 26 से भी जुड़ा हुआ प्रतीत होता है, जो लोगों को मिस्र से बाहर निकालने और अपने लोगों के बीच अपना निवास या पवित्र स्थान स्थापित करने के परमेश्वर के वादे के अंत में आता है। निर्गमन अध्याय 15 और श्लोक 17. और इसलिए अब हम सुझाव दे सकते हैं कि अब परमेश्वर ने अपना नया निर्गमन निवास स्थापित कर लिया है।

उसके नए निर्गमन का उद्देश्य अपने लोगों को उनके बीच अपना निवास स्थापित करने के लिए लाना है, जो अब परमेश्वर के अपने लोगों के साथ रहने, परमेश्वर के सच्चे मंदिर के साथ पूरा हो गया है। लेकिन श्लोक 17. श्लोक 17, इसलिए, उनसे बाहर निकलो और अलग हो जाओ, प्रभु कहते हैं।

किसी अशुद्ध वस्तु को मत छुओ, और मैं तुम्हें ग्रहण करूँगा। यशायाह के अध्याय में, यह यशायाह के अध्याय 52 और पद 11 से एक उद्धरण है। और यशायाह के अध्याय 52 और पद 11 में, हम इसे पढ़ते हैं।

चले जाओ, चले जाओ, वहाँ से निकल जाओ, कोई अशुद्ध वस्तु मत छुओ। वहाँ से निकल जाओ और पवित्र बनो। हे यहोवा के भवन का सामान ढोने वालों, परन्तु तुम जल्दबाजी में वहाँ से न निकलोगे और न ही जाओगे।

यह श्लोक 12 है। मैं चाहता हूँ कि आप इस बात पर ध्यान दें कि 2 कुरिन्थियों 6 में यशायाह 52:11 से पॉल द्वारा किया गया यह उद्धरण एक नए, नए पलायन के संदर्भ में है। अगले श्लोक पर ध्यान दें: लेकिन तुम जल्दबाजी में नहीं जाओगे या भागकर नहीं जाओगे, जैसे कि इस्राएलियों ने मिस्र को छोड़ा था, क्योंकि प्रभु तुम्हारे आगे चलेगा।

इस्राएल का परमेश्वर तुम्हारे पीछे पहरा देगा, और वहाँ और भी निर्गमन भाषा होगी। 52 में वापस जाएँ, पद एक में: जागो, जागो, सिव्योन, अपने आप को शक्ति के वस्त्र पहनाओ, वैभव के वस्त्र पहनो, यरूशलेम, पवित्र शहर, खतनारहित और अपवित्र लोग तुम्हारे पास प्रवेश नहीं करेंगे। अपने कपड़े उतारो, उठो, और अपने गले की जंजीरों से खुद को मुक्त करो।

सिव्योन की बेटी अब बंदी है। तो फिर, यह बंधन से निर्वासन की मुक्ति की भाषा में है, लेकिन पद चार, इसके लिए, वही है जो प्रभु यहोवा कहता है। सबसे पहले, मेरे लोग रहने के लिए मिस्र चले गए।

हाल ही में, अशूर ने उन पर अत्याचार किया है। इसलिए, मैं चाहता हूँ कि आप फिर से यशायाह के अध्याय 52 में एक नए निर्गमन की भाषा पर ध्यान दें। इसलिए, एक बार फिर, पॉल, मुझे नहीं लगता कि वह पुराने नियम के ग्रंथों के अंशों को अंधाधुंध तरीके से उठा रहा है, बल्कि, शायद

यशायाह 52 का उद्धरण अब अपने साथ परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को निर्वासन से बचाने, उन्हें सिख्योन में वापस लाने, उन्हें उस भूमि पर वापस लाने का पूरा संदर्भ लाता है जहाँ उन्हें लोगों के रूप में रहना है।

और ऐसा करते हुए, अशशूर को छोड़ते हुए, अपने निर्वासन के देश को छोड़ते हुए, उन्हें किसी भी अशुद्ध चीज़ को नहीं छूना है। और उन्हें वहाँ से चले जाना है और निर्गमन की भाषा को दर्शाते हुए फिर से शुद्ध होना है। तो, यशायाह का अध्याय 52 स्पष्ट रूप से संदर्भ में है।

यह उन नए निर्गमन ग्रंथों में से एक है जिसके बारे में हमने पहले बात की थी। और अब पॉल ने 2 कुरिन्थियों 6 के अध्याय छह में, अन्य पुराने नियम के ग्रंथों के साथ, अपने लोगों के साथ शुद्धता की आवश्यकता को प्रदर्शित करने के लिए उद्धृत किया है, उन्हें इस नए निर्गमन के भाग के रूप में पवित्र मंदिर के रूप में परमेश्वर के पवित्र लोगों के रूप में शुद्ध होने की आवश्यकता है जिसका उन्होंने अनुभव किया है। इसी तरह, उन्हें परमेश्वर के पवित्र मंदिर के रूप में स्वच्छ और शुद्ध होना चाहिए।

और फिर, निर्गमन का लक्ष्य परमेश्वर का निवासस्थान था, जहाँ वह अपने लोगों के साथ रहता था। और इसलिए, पौलुस ने पद 16 में लैव्यव्यवस्था 26 और यहजेकेल अध्याय 37 को मिलाकर एक पाठ उद्धृत किया, ये दोनों ही पाठ निर्गमन के उद्देश्यों से जुड़े हुए हैं। एक और जो कम से कम निहित है, शायद निहित रूप से निर्गमन भाषा को उद्घाटित करता है, वह इफिसियों का अध्याय दो और पद 11 से 22 होगा, एक बार फिर से एक पाठ, हम उनके साथ कई बार निपट चुके हैं, इसलिए मैं इसे या इसके किसी भी भाग को नहीं पढ़ूंगा, लेकिन हमने इफिसियों के अध्याय दो में देखा, पद 11 से 22 एक ऐसा पाठ है, जहाँ यहूदी और गैर-यहूदी जो औपचारिक रूप से एक दूसरे से अलग हो गए थे और एक दूसरे के साथ औपचारिक रूप से शत्रुता में थे, अब मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से एकजुट हो गए हैं।

परमेश्वर ने अब उन्हें एक साथ लाया है, और आपने उन्हें एक नई मानवता में पुनर्स्थापित किया है, वह चर्च जो अब एक पवित्र मंदिर है जहाँ परमेश्वर अपनी आत्मा के माध्यम से उनके बीच में निवास करता है। अब, जो दिलचस्प है, जैसा कि हमने पहले ही अन्य संदर्भों में उल्लेख किया है, वह यह है कि पौलुस बार-बार, यशायाह के ग्रंथों को पुनर्स्थापना के संदर्भ में संदर्भित करता है, जिसे हमने कहा कि यशायाह की पुनर्स्थापना की व्यापक संदर्भ अवधारणा एक नए निर्गमन के रूप में है, 40 से 55 तक, वास्तव में 40 से 66 तक। नया निर्गमन उन प्रमुख तरीकों में से एक है जिससे यशायाह परमेश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना को चित्रित करता है।

अब, पौलुस उन पाठों का हवाला देते हुए इस तथ्य को स्थापित करता है कि यहूदी और गैर-यहूदी को यशायाह की पुनर्स्थापना के वादों की पूर्ति में बहाल किया गया है, जिसे अंततः एक नए निर्गमन के संदर्भ में समझा जाता है, यह सुझाव दे सकता है कि इफिसियों 2:11 से 22 में, हमें यह समझना चाहिए, यहूदी और गैर-यहूदी की एक नई मानवता में पुनर्स्थापना के बारे में पौलुस की समझ में, अंततः यशायाह की पुनर्स्थापना की प्रत्याशा की पूर्ति के रूप में। अब, यह दिलचस्प है कि अध्याय दो में इसके ठीक पहले आने वाले खंड में, एक से 10 तक, जो कि वह खंड है जिस पर हम आमतौर पर इफिसियों में ध्यान केंद्रित करते हैं, हम पाते हैं कि पौलुस अपने पाठकों को



उन लोगों के रूप में संबोधित करता है जिन्हें शैतान के प्रभुत्व से बचाया गया है या बचाया गया है। तो, बचाव का विषय भी वहाँ है।

हम पहले ही इफिसियों के अध्याय एक, पद सात और पद 14 में छुटकारे के विषय को देख चुके हैं। लेकिन अब हम देखते हैं कि, परमेश्वर के लोगों को शैतान और पाप की शक्ति से छुड़ाया गया है, पद दो, पद एक, जब आप अपने अपराधों और पापों में मरे हुए थे। और एक बार जब आप जीवित थे, हम सभी जीवित थे, आप, आपने दुनिया के तरीकों का पालन किया, हवा के राज्य के शासक, आत्मा।

अब, काम करते हुए, तुम अपनी प्रवृत्तियों, अपराधों, अपराधों और पाप में मरे हुए थे। लेकिन अब परमेश्वर और उसके महान प्रेम और दया ने तुम्हें मसीह के साथ जीवित कर दिया है। और उसने तुम्हें बचाया है, ताकि अपने अनुग्रह के अतुलनीय धन को प्रदर्शित कर सको।

इसलिए यहाँ भी, हम मुक्ति और उद्धार पाते हैं, लेकिन अब यह हमें एक नई मानवता में पुनर्स्थापित करता है। निर्गमन के मूल भाव का अनुसरण करना भी दिलचस्प है; यह अध्याय दो में मंदिर के संदर्भ के साथ चरम पर है, कि अब हम निर्गमन का उद्देश्य हैं। हम अब एक पवित्र निवास बन गए हैं जहाँ परमेश्वर रहता है, एक अभयारण्य, एक मंदिर जहाँ परमेश्वर अपनी आत्मा के माध्यम से निवास करता है।

इसलिए, यह संभव है कि हमें इफिसियों दो को पढ़ना चाहिए, विशेष रूप से इसके निर्गमन के संदर्भ में, जो अंततः एक नए निर्गमन के संदर्भ में है। इसलिए, निष्कर्ष में पॉलिन साहित्य के अनुसार, और ऐसे अन्य ग्रंथ हैं जिन्हें हम संभवतः उद्धृत कर सकते हैं और संदर्भित कर सकते हैं, लेकिन पॉलिन साहित्य के अनुसार, चूंकि चर्च ईश्वर के सच्चे लोग हैं, क्योंकि चर्च नए युग, नई वाचा के लोग हैं, वे अब एक नए निर्गमन से गुजर चुके हैं। वे अब एक नए निर्गमन से गुजर चुके हैं, पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं द्वारा वादा किया गया नया निर्गमन।

और इसलिए, मुझे लगता है कि पॉल, सुसमाचारों में जो हम पाते हैं उसके अनुरूप, यीशु को एक नए पलायन को पूरा करने के रूप में चित्रित करता है, एक नया पलायन जो पहले पलायन के अंतिम इरादे को पूरा करता है, लेकिन भविष्यवाणी पाठ द्वारा प्रत्याशित नए पलायन की पूर्ति और पूर्णता लाता है। इसलिए, पॉल के अनुसार, हमारे उद्धार को एक नए पलायन के ढांचे के भीतर समझा जाना चाहिए जिसे यीशु लाता है और पूरा करता है, नए पलायन को पूरा करता है, पुराने नियम में प्रत्याशित पलायन मोक्ष। अब, ऐसे कई अन्य भविष्यवाणी पाठ हैं जिनकी ओर हम पूरे पुराने नियम या पूरे नए नियम में इशारा कर सकते हैं।

मैं उनमें से कुछ पर भी उतरना चाहता हूँ, और वह भी केवल प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर जाने से पहले कुछ हिब्रू पाठों पर एक संक्षिप्त टिप्पणी करना है, लेकिन संभवतः इब्रानियों के अध्याय तीन और चार। हमने पहले ही भूमि के संदर्भ में इब्रानियों के अध्याय तीन और चार को देखा है और, एक वाचा के संदर्भ में, संभवतः, इब्रानियों के अध्याय तीन और चार में, लेखक, लेखक अपने उद्धार की कल्पना करता है, यीशु, एक नई वाचा के लोग इसे विश्राम की प्राप्ति के संदर्भ में समझते हैं, जो कि, इस्राएल को वादा किए गए देश में प्राप्त करना था। लेकिन इब्रानियों के

अध्याय तीन और चार में लगता है, और यहाँ तक कि इब्रानियों की व्यापक पुस्तक भी मानती है, परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को मिस्र से छुड़ाने का व्यापक निर्गमन विवरण, वादा किए गए देश तक जंगल से होते हुए उनका सफर, जिसमें सिनाई में कानून देना, तम्बू में पूजा करना शामिल है, जिसे मूसा को दिया गया तम्बू बनाने का निर्देश और लोगों को वादा किए गए देश की ओर ले जाना, जहाँ वे वास्तव में जाने में विफल रहे।

और अब ऐसा लगता है कि लेखक इसका उपयोग अपने पाठकों को चेतावनी देने के लिए कर रहा है कि वे अपने पूर्वजों की तरह वही गलती न दोहराएँ। इसलिए इब्रानियों तीन और चार में भी, विश्राम की तुलना जिसमें हम अभी प्रवेश कर रहे हैं और जिसमें हम भविष्य में प्रवेश करेंगे, जो कि यीशु मसीह में है, की तुलना में देखा जा रहा है, या उस विश्राम की पूर्ति जिसका वादा किया गया था, ऐसा लगता है कि यह भी निर्गमन के मूल भाव को आह्वान करता है ताकि हमारा विश्राम, विश्राम, उद्धार का विश्राम जिसका हम अभी अनुभव करते हैं और जिसमें प्रवेश करते हैं, जिसे अब यीशु मसीह ने पेश किया है और प्रदान किया है, अंततः एक नए निर्गमन के प्रकाश में देखा जा सकता है। वास्तव में, फिर से, उससे भी अधिक व्यापक रूप से, विशेष रूप से नहीं बल्कि मुख्य रूप से निर्गमन का मूल भाव इब्रानियों की पुस्तक के पीछे छिपा हुआ प्रतीत होता है।

धारणा, यीशु द्वारा पुराने नियम की बलिदान प्रणाली को प्रतिस्थापित करना, यीशु द्वारा अपने लोगों के लिए यहोशू से भी बड़ा उद्धार प्रदान करना, यीशु द्वारा मूसा से भी बड़ा होना, तथा अपने लोगों के लिए विश्राम प्रदान करना। फिर से, यह सब कम से कम आंशिक रूप से निर्गमन के संदर्भ में प्रतीत होता है। इसलिए एक बार फिर, मसीह और यीशु के प्रावधान के आधार पर परमेश्वर के लोग अब जो उद्धार अनुभव करते हैं और उसका आनंद लेते हैं, फिर से, पुराने नियम के बलिदानों की पूर्ति के रूप में क्रूस पर उनकी बलिदानी मृत्यु, ये सभी कम से कम हमारे उद्धार के मूल भाव को एक नए निर्गमन के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

इसलिए, हिब्रू भाषा के बहुत से भाग को भी नए निर्गमन के ढांचे के भीतर समझा जा सकता है। संभवतः, फिर से, नए नियम में पॉलिन साहित्य के बाहर कुछ अन्य अंश हैं जिनकी ओर हम इशारा कर सकते हैं, लेकिन मैं नए नियम की अंतिम पुस्तक पर जाकर अपनी चर्चा समाप्त करना चाहता हूँ। और वह है रहस्योद्घाटन की पुस्तक, जहाँ निर्गमन का मूल भाव वास्तव में हमारे उद्धार के संदर्भ में पुस्तक में विकसित एक स्पष्ट मूल भाव है।

प्रकाशितवाक्य को देखने से पहले दूसरी बात जो हमें कहनी है, वह है निर्गमन, मूल निर्गमन का उद्देश्य और भविष्यसूचक नया, नया निर्गमन, दोनों ही नए नियम में पूर्णता पाते हैं, लेकिन विशेष रूप से प्रकाशितवाक्य में, एक बार फिर, पहले से ही, लेकिन अभी तक उद्घाटित युगांतशास्त्र की योजना के अनुसार। हमने पहले से ही जिन ग्रंथों को देखा है, उनमें से बहुत से सुसमाचार और पॉलिन साहित्य में, और कुछ हद तक इब्रानियों में, इस पहलू पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि यीशु ने पहले ही निर्वासन को समाप्त कर दिया है। वह एक नया निर्गमन उद्धार लेकर आया है, और हम सुसमाचार, सुसमाचार और अधिनियमों, और पॉलिन पत्र साहित्य में हैं। अब हम यीशु मसीह में जिस उद्धार में भाग लेते हैं, उसे एक नए निर्गमन के रूप में वर्णित किया जाना चाहिए।

हम देखेंगे कि प्रकाशितवाक्य में भी, नए निर्गमन उद्धार के कुछ पहले से ही आयाम हैं, लेकिन मुख्य रूप से, प्रकाशितवाक्य के लेखक जॉन, निर्गमन के मूल भाव की अभी तक या भविष्य की परिणति का अनुमान लगाते हैं। हम यह भी देखेंगे कि प्रकाशितवाक्य के लेखक ने मूल निर्गमन मिस्र से दोनों के समानांतरों को आकर्षित किया है, निर्गमन के लिए प्रतीत होने वाले संकेतों, मूल निर्गमन विवरण और अन्य, मैं कहूँगा, अन्य यहूदी साहित्य जो इसे याद करते हैं, का उपयोग किया है। लेकिन जॉन, मेरे विचार में, यशायाह की पुस्तक से नई निर्गमन भाषा को भी आकर्षित करता है।

और मैं कोशिश करूँगा, हम कुछ जगहों को प्रदर्शित करने की कोशिश करेंगे जहाँ ऐसा होता है। तो शुरुआती बिंदु रहस्योद्घाटन अध्याय एक और छंद पाँच और छह होगा, रहस्योद्घाटन एक, पाँच और छह, और अक्सर, अक्सर ग्रंथों की शुरुआत, नए नियम की पुस्तकों की शुरुआत, महत्वपूर्ण हो सकती है क्योंकि वे अक्सर आपको यह निर्धारित करते हैं कि पुस्तक के बाकी हिस्सों को कैसे पढ़ा जाना है। वे अक्सर, हमेशा नहीं, और पूरी तरह से नहीं, कभी-कभी वे बाद में उद्देश्यों को पेश करेंगे, लेकिन वे अक्सर पुस्तक की शुरुआत में मुख्य उद्देश्यों को पेश करते हैं, कि लेखक आपको पुस्तक में भविष्य के विकास को कैसे समझना चाहते हैं।

तो अध्याय एक, पद पाँच और छह जो कि एक सामान्य प्रथम शताब्दी के पत्र का अभिवादन अनुभाग है, मैं पद चार से शुरू करूँगा, यूहन्ना की ओर से एशिया प्रांत की सात कलीसियाओं को, उस की ओर से जो है, और जो था, और जो आनेवाला है, और उसके सिंहासन के सामने की सात आत्माओं की ओर से, और यीशु मसीह की ओर से, जो विश्वासयोग्य गवाह और मरे हुएों में से ज्येष्ठ और पृथ्वी के राजाओं का शासक है, उस को अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे, जो हम से प्रेम करता है, और जिसने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया, और हमें याजकों के राज्य की सेवा करने के लिये, याजकों के राज्य की सेवा करने के लिये, और उसके परमेश्वर और पिता की सेवा करने के लिये, महिमा और सामर्थ युगानुयुग रहे। आमीन। मैं चाहता हूँ कि आप यहाँ दो बातों पर ध्यान दें।

सबसे पहले, उसके लहू द्वारा हमारे पापों से मुक्त होने या छुड़ाए जाने का स्पष्ट संदर्भ है, जो मुझे लगता है कि एक स्पष्ट निर्गमन भ्रम है। फिर से, बंधन से मुक्ति या आज़ादी, इस बार नए नियम के अनुरूप, आज़ादी और मुक्ति जरूरी नहीं कि किसी विदेशी शासक या उत्पीड़क से हो, बल्कि पाप के बंधन से मुक्ति है। तो, हम उसके लहू द्वारा पापों से मुक्त या मुक्त हो गए हैं।

फिर से, शायद फसह के मेमने के मूल भाव को याद करते हुए, लेकिन मुझे लगता है कि इसे पुख्ता करने वाली बात छंद छह है और इसने हमें एक राज्य और पुजारी बनाया है, जिसे हमने देखा है कि यह निर्गमन 19, छह का भ्रम है। इसलिए, निर्गमन के बाद, परमेश्वर अपने लोगों को बचाता है और उन्हें बचाता है, उन्हें निर्गमन 19 के उद्देश्य के लिए मुक्त करता है, ताकि उसके लोग उसके लोग हो सकें, और वे उसके याजकों का राज्य होंगे। इसलिए मुझे लगता है कि अध्याय एक, पाँच और छह यहाँ पहले से ही निर्गमन के मूल भाव का संकेत देते हैं, जैसे कि इस्राएल को मिस्र से छुड़ाया गया और मिस्र से बचाया गया और मुक्त किया गया और छुड़ाया गया ताकि वे याजकों का राज्य बन सकें।

अब, हम नए नियम में पाते हैं कि परमेश्वर के लोगों को भी उसके लहू के द्वारा पाप से मुक्त और मुक्त किया गया ताकि वे याजकों के राज्य के रूप में कार्य कर सकें। तो, यह पहले से ही इस बात का संदर्भ प्रतीत होता है कि मसीह ने अपने लोगों के लिए एक निकास, एक नया निर्गमन उद्धार लाने में पहले से ही क्या किया है। फिर से, लेखक यशायाह से नए निर्गमन के मूल भाव का संकेत नहीं देता है, लेकिन स्पष्ट रूप से एक नए निर्गमन के संदर्भ में हमारे उद्धार की कल्पना करता है।

अर्थात्, हम उसके लहू के द्वारा छुड़ाए गए और स्वतंत्र किए गए हैं और याजकों का राज्य बनने के उद्देश्य से। जब लेखक प्रकाशितवाक्य 16 में प्रकाशितवाक्य आठ और नौ में तुरही और बैल के न्याय के रूप में मूल निर्गमन को याद करता है, तो निर्गमन की मूल भावना और भी स्पष्ट रूप से सामने आती है। आपको शायद उनमें से एक याद हो, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के केंद्र में, साहित्यिक रूप से लेकिन धार्मिक रूप से भी प्रमुख विशेषताओं में से एक, सात विपत्तियों का यह तीन गुना चक्र है।

यह सात मुहरों से शुरू होता है, जो फिर, अध्याय छह में, सात तुरहियों में बदल जाता है, और अध्याय आठ, नौ में, और फिर अंत में अध्याय 16 में, सात बैलों में, ताकि सातों का यह त्रिगुण चक्र, सात विपत्तियाँ बन जाए। दिलचस्प बात यह है कि जब आप तुरही और बैल के अनुक्रमों को ध्यान से पढ़ते हैं, तो सोचना बहुत मुश्किल है, खासकर जब आप इसे प्रकाशितवाक्य के निर्गमन के मूल भाव के विकास के व्यापक संदर्भ के प्रकाश में पढ़ते हैं, लेकिन इसे न पढ़ना बहुत मुश्किल है। और मुझे लगता है कि निर्गमन की विपत्तियों के संदर्भ में इसे न पढ़ना असंभव है।

मुझे इनमें से बस कुछ पढ़ने दें या शायद कुछ का सारांश दें। मैं इन खंडों या अध्यायों को पूरी तरह से नहीं पढ़ना चाहता, लेकिन मुझे शायद कुछ खंड पढ़ने दें या इतना सारांश दें कि आप इनके बीच संबंध देख सकें। तो यहाँ सात तुरहियाँ हैं।

पहले स्वर्गदूत ने तुरही बजाई, और ओले और आग के साथ खून भी मिला। और इसे धरती पर फेंक दिया गया। फिर से, मैं बस जल्दी से आगे बढ़ूंगा।

मैं पूरा नहीं पढ़ूंगा। दूसरे देवदूत ने तुरही बजाई। एक विशाल पर्वत जैसी कोई चीज जल रही थी।

समुद्र का एक तिहाई भाग खून में बदल गया, और एक तिहाई जीवित प्राणी मर गए। आइए श्लोक 10 देखें। तीसरे स्वर्गदूत ने अपनी तुरही बजाई।

एक बड़ा तारा जो मशाल की तरह चमक रहा था, एक तिहाई नदियों और पानी के झरनों पर आसमान से गिरा। और फिर, वे इतने कड़वे थे कि उन्हें पीने वाले लोग मर गए। चौथे स्वर्गदूत ने अपनी तुरही बजाई।

सूर्य का एक तिहाई भाग, चंद्रमा का एक तिहाई भाग और तारों का एक तिहाई भाग नष्ट हो गया। इसलिए, उनमें से एक तिहाई भाग अंधकारमय हो गया। दिन का एक तिहाई भाग प्रकाशहीन हो गया।

अगला, दिलचस्प बात यह है कि, एक प्लेग है जिसमें एक पाँचवाँ देवदूत आता है और तुरही बजाता है। मैंने एक तारे को आसमान से गिरते देखा, आसमान से धरती पर गिरते हुए। तारे को रसातल की शाफ्ट की चाबी दी गई थी।

जब उसने रसातल को खोला, तो एक विशाल, विशाल भट्टी से धुआँ निकला। धुएँ से सूर्य और आकाश अंधकारमय हो गए, और धुएँ से, पद्य तीन में टिड्डियाँ निकलीं। और लेखक उन टिड्डियों के प्रकट होने का वर्णन करता है।

तो, क्या आप विपत्तियों के साथ संबंध देखते हैं? इनमें से अधिकांश का विपत्तियों से संबंध है। पानी का खून में बदल जाना, टिड्डियाँ, खून के कारण पीने के लिए अनुपयुक्त पानी, कम से कम दिन का कुछ भाग अंधकारमय हो जाना, विपत्ति के कारण अब परमेश्वर घास डालता है, ओलों का संदर्भ, पहली तुरही में, इन सभी का निर्गमन की विपत्तियों से स्पष्ट संबंध है। जब आप अध्याय 16 और परमेश्वर के क्रोध के कटोरे के उंडेलने पर पहुँचते हैं, तो भी यही सच है।

तो, पहला स्वर्गदूत गया; यह अध्याय 16 है, श्लोक दो ने अपना कटोरा उंडेला, और बदसूरत घाव निकल आए और वे सभी लोग जिन पर जानवर का निशान नहीं था। दूसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा उंडेला और उसे समुद्र पर रख दिया, और यह खून जैसा हो गया, या यह एक मृत व्यक्ति के खून जैसा हो गया। और हर जीवित प्राणी मर गया।

तीसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा नदी और पानी के झरनों में उंडेला, और वे खून बन गए। चौथे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा सूरज में उंडेला और सूरज को लोगों को आग से झुलसाने दिया गया। वे तीव्र गर्मी से झुलस गए।

पाँचवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा जानवर के सिंहासन पर उंडेला और राज्य अंधकार में डूब गया, ठीक वैसे ही जैसे फिरौन का राज्य था। लोग पीड़ा में अपनी जीभ चबाने लगे और परमेश्वर को कोसने लगे। छठे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा महान नदी फ़रात में उंडेला।

पृथ्वी के राजाओं के लिए रास्ता तैयार करने के लिए इसका पानी सूख गया। फिर मैंने तीन अशुद्ध आत्माओं को देखा जो मेंढकों की तरह दिखती थीं। तो स्पष्ट रूप से, मैं यहीं रुकूंगा।

स्पष्ट रूप से लेखक इन अंतिम दो विपत्तियों के चक्रों में अध्याय आठ और नौ में तुरहियों के साथ और अब अध्याय 16 में बैलों के साथ मानवता पर इन निर्णयों को प्रस्तुत करना चाहता है, जो निर्गमन विपत्तियों के तरीके के अनुसार हैं, जो मिस्र पर न्याय थे। अब, मेरा उद्देश्य यह वर्णन करना नहीं है कि ये वास्तव में क्या हैं, वे कैसे दिखते हैं, और वे कैसे पूरे होंगे। इस बारे में बहुत बहस है, और यह मेरा उद्देश्य नहीं है।

मेरा इरादा बस यह दिखाना है कि ये रहस्योद्घाटन में निर्गमन के मूल भाव में कैसे योगदान करते हैं। और, मुझे लगता है कि यह संबंध उसी तरह से स्पष्ट है जिस तरह से परमेश्वर ने अपने लोगों को बचाने और उन्हें उनके उद्धार और विरासत में लाने से पहले एक अत्याचारी दुष्ट लोगों, एक अत्याचारी दुष्ट राष्ट्र शासक जो मिस्र है, पर अपना न्याय उंडेला। उसी तरह, परमेश्वर एक बार फिर से अपने न्याय, अपने निर्गमन-जैसे न्याय और विपत्तियों को एक दुष्ट अत्याचारी राष्ट्र

शासक पर उंडेलने जा रहा है, इस बार रोमन साम्राज्य और सम्राट, अपने लोगों के निर्गमन उद्धार और उन्हें उनकी विरासत में लाने की तैयारी और प्रस्तावना के रूप में, जो मुझे लगता है कि रहस्योद्घाटन 21 और 22 की नई रचना है।

इसलिए, निर्गमन की कहानी रहस्योद्घाटन की अवधारणा और मोक्ष की समझ को रेखांकित करती है। लेखक द्वारा निर्गमन की मूल भावना का उपयोग करने का एक कारण यह भी है कि वह अपने पाठकों को उनकी स्थिति को एक नई रोशनी में देखना चाहता है। रोम में उनकी स्थिति को मिस्र के समान ही समझा जाना चाहिए, जिसमें वे इस तथ्य के बंधन में हैं कि उन्हें रोमन साम्राज्य द्वारा उत्पीड़ित किया जा रहा है।

और इसके लिए निर्गमन-प्रकार के उद्धार की आवश्यकता है, जिसे परमेश्वर स्वयं लाने जा रहा है। लेकिन यह उन न्यायदंडों से प्रदर्शित होता है जो हम निर्गमन-प्रकार के न्यायदंड लाएंगे जो वह एक अन्य दुष्ट राष्ट्र, रोमन साम्राज्य पर बरसाएगा। और मैं कहूँगा कि कोई भी, कोई भी दुष्ट अत्याचारी राष्ट्र जो परमेश्वर के लोगों को नुकसान पहुँचाता है और उन पर अत्याचार करता है और जो परमेश्वर के उद्देश्यों को विफल करने का प्रयास करता है।

वे भी, इन निर्गमन-प्रकार की विपत्तियों के विषय होंगे जो परमेश्वर के उद्धार और बचाव, उसके लोगों को याजकों का राज्य बनाने और अंततः भूमि का उत्तराधिकार, प्रकाशितवाक्य 21 और 22 की नई सृष्टि के लिए एक प्रस्तावना हैं। दिलचस्प बात यह भी है कि अध्याय 16 में दिए गए साहसिक निर्णयों से ठीक पहले, जिन्हें हमने अभी देखा है, निर्गमन विपत्तियों पर सावधानीपूर्वक आधारित हैं। उससे ठीक पहले, मुझे लगता है कि अध्याय 15 में निर्गमन का स्पष्ट संदर्भ मिलता है।

तो, फिर से, संक्षेप में, आठ, नौ और 16 में, विपत्तियों, अंधकार, ओले, पानी का खून में बदल जाना, दिन या राज्य का अंधकार में होना, टिड्डे, मेंढक, घाव, सभी तरह की समानताएं निर्गमन के साथ हैं। लेकिन अध्याय 16 और ईश्वर के क्रोध के कटोरे से पहले जो निर्गमन को चलाने जा रहे हैं, अध्याय 15 से शुरू करते हुए हम जो पाते हैं, उस 15 की तैयारी में, मैंने स्वर्ग में एक और महान और अद्भुत संकेत देखा, सात स्वर्गदूतों के साथ सात अंतिम विपत्तियाँ, क्योंकि वे अंतिम हैं क्योंकि उनके साथ ईश्वर का क्रोध पूरा हो गया है। अब, फिर से, विपत्तियों को बाहर निकालने और उंडेलने से पहले, वह आपको एक और दिलचस्प दृश्य से परिचित कराता है।

और मैंने देखा कि कांच का एक समुद्र आग से चमक रहा था और समुद्र के किनारे खड़ा था। जो लोग उसकी छवि में जानवर और उसके नाम की संख्या पर विजयी हुए थे, उन्होंने अपने द्वारा दी गई वीणाएँ पकड़ लीं और परमेश्वर के सेवक मूसा और मेमने का गीत गाया। और फिर यह आगे बढ़ता है।

हे प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, तेरे काम महान और अद्भुत हैं, तेरे मार्ग न्यायपूर्ण और सत्य हैं। हे प्रभु, उन राष्ट्रों के राजा जो नहीं करेंगे, जो तेरा भय नहीं मानेंगे, और तेरे नाम की महिमा नहीं करेंगे, क्योंकि केवल तू ही पवित्र है। सभी राष्ट्र तेरे लिए तेरे सामने आकर आराधना करेंगे।

आपके धार्मिक कार्य प्रकट हो चुके हैं। अब, यदि आप पीछे जाकर मूसा के गीत, निर्गमन 15 को पढ़ें, तो यह शब्दों में उससे बिल्कुल मेल नहीं खाता। यूहन्ना ने वास्तव में अन्य ग्रंथों को शामिल करके न केवल मूसा का गीत बल्कि मेमने का गीत भी बनाया है।

लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप यहाँ स्पष्ट, स्पष्ट तस्वीर देखें। हमारे पास परमेश्वर के लोग समुद्र के किनारे खड़े हैं, जिसे वह कांच का समुद्र कहता है - अब वे मूसा का गीत गा रहे हैं, जो कि निर्गमन में हुआ था।

लोग समुद्र पार करते हैं, और अब वे समुद्र के किनारे खड़े हैं। और निर्गमन के अध्याय 15 में, हम मूसा का गीत गाते हुए पाते हैं। अब हम पाते हैं कि ठीक यही बात प्रकाशितवाक्य के अध्याय 15 में घटित हो रही है; उसके ठीक पहले, हम महामारी के उंडेलने को देखते हैं।

तो एक बार फिर, इन सब को एक साथ रखते हुए, परमेश्वर की तैयारी में, अपने लोगों को छुड़ाने के लिए, जहाँ वे समुद्र से निकलेंगे और मूसा का गीत गाएँगे। हम यह भी पाते हैं कि परमेश्वर एक अत्याचारी दुष्ट साम्राज्य पर अपना न्याय उंडेल रहा है, परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को छुड़ाने और उन्हें बचाने और छुड़ाने की तैयारी में ताकि वे उनके लिए परमेश्वर के वादों को प्राप्त कर सकें। अध्याय 21 में, फिर मुझे लगता है कि हम नए निर्गमन मूल भाव के लिए निर्गमन मूल भाव का चरमोत्कर्ष पाते हैं, अध्याय 21 और श्लोक तीन।

हमने पहले ही इसे नई सृष्टि के संदर्भ में एक धोखा के रूप में देखा है, लेकिन मुझे लगता है कि यह यही है। यह, यह इज़राइल और अन्यजातियों की विरासत है। यह परमेश्वर के लोगों की विरासत है जिसे उन्हें पहले टेक्सास में विरासत में मिलना था क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें भूमि विरासत में देने, उन्हें भूमि में बसाने और उनके बीच रहने के लिए पहले पलायन से बाहर निकाला था।

हम यहाँ भी यही पाते हैं। परमेश्वर अपने लोगों को एक नए निर्गमन में बचाता है और बचाता है, विपत्तियों के माध्यम से न्याय करने के संदर्भ में, उन अत्याचारी लोगों को जो उन्हें नुकसान पहुँचाते हैं। अब, परमेश्वर उन्हें एक नए निर्गमन में बचाता है और उन्हें उनकी भूमि पर उनकी विरासत में लाता है, जो कि नई सृष्टि है।

इसलिए, उदाहरण के लिए, 21, 21 और तीन में, यहाँ निर्गमन का लक्ष्य है। परमेश्वर का निवास स्थान अब लोगों के बीच है। वह उनके साथ रहेगा।

वे लोग होंगे, और परमेश्वर स्वयं उनके साथ होगा। वे परमेश्वर हैं, जैसा कि हमने कहा कि यहजेकेल अध्याय 37, लैव्यव्यवस्था 26 का एक संकेत है। निर्गमन 15:17 का लक्ष्य परमेश्वर के लिए उनके बीच में उनका पवित्र स्थान स्थापित करना है।

अब, यही हम प्रकाशितवाक्य 21 के अध्याय तीन में घटित होते हुए पाते हैं। लेकिन अगर मैं थोड़ा पीछे भी जाऊँ, तो पद एक के अंत में, पद एक में यूहन्ना कहता है, मैंने एक नया स्वर्ग, नई पृथ्वी, पहला स्वर्ग, और पहली पृथ्वी को जाते हुए देखा। और कोई समुद्र नहीं था।

मेरी राय में, यह नए निर्गमन मूल भाव का हिस्सा है। याद कीजिए कि यशायाह अध्याय 51 और नौ और 10 तथा कुछ अन्य ग्रंथों में, हमने देखा कि परमेश्वर एक बार फिर समुद्र को सुखा देगा। समुद्र बुराई और अराजकता का प्रतीक था और जो परमेश्वर के लोगों को नुकसान पहुँचाता था, जो परमेश्वर के लोगों के लिए एक बाधा थी जैसा कि पहले निर्गमन में था, परमेश्वर के लोगों के लिए उसी तरह पार करने और अंततः भूमि पर पहुँचने में बाधा थी।

यहाँ समुद्र बुराई और अराजकता का प्रतीक या रूपक है। पहले, यह जानवर है जो समुद्र से बाहर आता है। अध्याय 13, समुद्र जानवर का घर है।

यह उस चीज़ को दर्शाता है जो बुरी और हानिकारक है, जो परमेश्वर के लोगों के प्रति शत्रुतापूर्ण है। अब एक नए निर्गमन में, परमेश्वर न केवल इसे अलग करता है, बल्कि इसे मिटा देता है। यह गायब हो जाता है।

इसलिए, मुझे लगता है कि अध्याय एक, श्लोक एक में समुद्र का यह गायब होना, निर्गमन समुद्र का हिस्सा है। यह, या निर्गमन मूल भाव है। यह गायब होना है, लाल सागर का अंतिम गायब होना जो परमेश्वर के लोगों के लिए शत्रुतापूर्ण और नुकसानदेह होगा, बुराई का प्रतीक, जानवर का घर, और उनकी भूमि में पार करने में बाधा उत्पन्न करेगा।

अब जब इसे हटा दिया गया है, तो वे अपने देश में जा सकते हैं और इसे विरासत में ले सकते हैं, जो कि नई रचना है। एक और स्पष्ट बात: मुझे लगता है कि निर्गमन पाठ और नया निर्गमन पाठ पाँचवें श्लोक में पाया जाता है। जो उस पर बैठा था, उसने कहा, देखो, मैं सब कुछ नया बना रहा हूँ।

यह यशायाह की पुस्तक, विशेष रूप से अध्याय 42, यशायाह अध्याय 42 का प्रत्यक्ष संकेत है, जहाँ लेखक कहता है, फिर से, ईश्वर को यह कहते हुए दर्शाया गया है, मैं सब कुछ नया बना रहा हूँ, या मैं चीजों को नया बना रहा हूँ, जो दिलचस्प रूप से यशायाह 42 में एक नई रचना के संदर्भ में है या यशायाह अध्याय 43 एक नए निर्गमन के संदर्भ में है। और इसलिए दिलचस्प बात यह है कि, फिर से, अगर हम लेखक के पुराने नियम के पाठ के उपयोग को उनके साथ, उनके संदर्भ, इस उद्धरण, इस भ्रम, या यशायाह अध्याय 43 से इस उद्धरण को समझते हैं, तो यह अपने साथ नए निर्गमन अर्थ लाता है। इसलिए, जॉन ने यशायाह के नए निर्गमन चित्रण के संदर्भ में एक नए पुराने नियम के पाठ से उद्धरण दिया है।

तो फिर से, इन सब को एक साथ रखते हुए, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक हमारे भविष्य के युगांतिक उद्धार को निर्गमन की अंतिम पूर्ति के रूप में देखती है, जहाँ परमेश्वर अपने लोगों को छुड़ाएगा और बचाएगा। वह, उसी समय, एक दुष्ट, अत्याचारी राष्ट्र पर अपना न्याय, निर्गमन विपत्ति न्याय उंडेलेगा। वह अपने लोगों को छुड़ाएगा और बचाएगा।

वे समुद्र के किनारे खड़े होकर मूसा और मेमने का गीत गाएँगे, और फिर वे अपनी विरासत में प्रवेश करेंगे जहाँ कोई लाल सागर नहीं होगा; उसी तरह, परमेश्वर ने लाल सागर को सुखा दिया ताकि इस्राएल अपने देश में पार कर सके। उसी समय, परमेश्वर के लोग एक दिन पाएँगे कि



मुसीबत का लाल सागर गायब हो गया है ताकि वे अपने देश, अपनी विरासत, नई सृष्टि में पार कर सकें, जहाँ निर्गमन की पूर्ति में, परमेश्वर उनके बीच निवास करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और वह उसका परमेश्वर होगा। इसलिए, प्रकाशितवाक्य स्वयं निर्गमन की सभी प्रकार की भाषा के साथ प्रतिध्वनित होता है, इसलिए प्रकाशितवाक्य की पुस्तक हमारे उद्धार की कल्पना करने के सबसे महत्वपूर्ण तरीकों में से एक निर्गमन के संदर्भ में या एक नए निर्गमन के संदर्भ में है।

दोनों जानते हैं कि परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ क्या किया है, लेकिन अभी तक नहीं, नए निर्गमन को चित्रित करने के लिए जिसे परमेश्वर भविष्य में एक नई सृष्टि में परिणत करना चाहता है।

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर उनके व्याख्यान श्रृंखला में है। यह सत्र 19, नया निर्गमन, भाग 2 है।